

Intelligentsia International Journal Of Multidisciplinary Research

ज्ञान एवं पाठ्यक्रम : प्रतिमान प्रतिस्थापन एवं अभिनव प्रवृत्तियाँ

प्रो. डॉ. विभूति भूषण मलिक

पूर्व संकायाध्यक्ष सामाजिक विज्ञान

प्राध्यापक समाजशास्त्र विभाग

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ (भारत)

सार :

"ज्ञान क्या है?" - यह एक अत्यंत जटिल प्रश्न है, जिसका उत्तर शायद हर किसी के पास है, और शायद किसी के पास नहीं। परंतु एक बात निर्विवाद है: कोई व्यक्ति किसी तथ्य या घटना को या तो जानता है, या नहीं जानता। सामान्यतः यह माना जाता है कि ज्ञान, सत्य की खोज की एक निरंतर प्रक्रिया है (स्टैनफोर्ड)। यह खोज मानव इतिहास की शुरुआत से ही चली आ रही है, क्योंकि मनुष्य जीवनभर ज्ञान अर्जन की ओर अग्रसर रहता है। आधुनिक युग में यह ज्ञान प्राप्ति एक संगठित व्यवस्था के रूप में शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत आती है, जिसका आधार है – पाठ्यक्रम (Curriculum)। पाठ्यक्रम केवल विषयों की सूची नहीं, बल्कि यह एक संपूर्ण शिक्षण ढांचा है, जो यह तय करता है कि, क्या पढ़ाया जाए, क्यों पढ़ाया जाए, कैसे, किसे और किसके द्वारा पढ़ाया जाए, तथा शिक्षण के पश्चात, क्या सीखा गया, और व्यवहार में कैसा परिवर्तन आया। समाज और समय कभी स्थिर नहीं रहते – वे निरंतर परिवर्तनशील हैं। हर युग में ज्ञान और विज्ञान की परिभाषा, उसकी पद्धतियाँ और दृष्टिकोण उस समय की सामाजिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक सोच से प्रभावित होती रही हैं। उदाहरणस्वरूप, प्राचीन यूनान में सुकरात, प्लेटो और अरस्तु की आदर्शवादी विचारधारा प्रचलित थी, वहीं भारत में वैदिक दर्शन ने ज्ञान को आध्यात्मिक संदर्भ में परिभाषित किया। संभवतः उस समय की आवश्यकताओं और परिस्थितियों ने यही विचारधाराएँ जन्म दीं। आज के युग में विचारधाराओं का स्वरूप बदल चुका है। उत्तर-संरचनावाद, उत्तर-आधुनिकता, नव-पारिस्थितिकी और समावेशन जैसे दृष्टिकोण हमारे ज्ञान और पाठ्यक्रम को प्रभावित कर रहे हैं। किसी भी कालखण्ड में वह विचार, दृष्टिकोण या प्रतिमान (पैराडाइम) जो ज्ञान एवं विज्ञान की पद्धतियों को अपने भीतर समेट लेता है, वही उस समय का "निदर्शन" या प्रतिमान या दृष्टिकोण या विचारधारा कहलाता है। जब पुराने निदर्शन को एक नया निदर्शन प्रतिस्थापित करता है, तो यह परिवर्तन "पैराडाइम शिफ्ट" निदर्शन प्रतिस्थापन कहलाता है। इस अध्याय का मूल उद्देश्य यही—समझना है कि "ज्ञान और पाठ्यक्रम" की वर्तमान प्रवृत्तियाँ क्या हैं और वे किस निदर्शन, विचार, दृष्टिकोण या प्रतिमान (पैराडाइम) से प्रभावित हो रही हैं।

कुंजी शब्द : ज्ञान, पाठ्यक्रम, निदर्शन

प्रकाशन समयरेखा:

मूल पाण्डुलिपि प्राप्त – 01 अक्टूबर, 2025; सहकर्मि समीक्षण पूर्ण – 03 अक्टूबर, 2025; संशोधित पाण्डुलिपि प्राप्त – 06 अक्टूबर, 2025; स्वीकृत एवं प्रकाशित – 09 अक्टूबर, 2025

अनुशंसित संदर्भ

मलिक, वि.वि. (2025). ज्ञान एवं पाठ्यक्रम : प्रतिमान प्रतिस्थापन एवं अभिनव प्रवृत्तियाँ. इंटेलेजेंटसिया इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 1(3), 1-9.

परिचय

ज्ञान सदैव से मानव सभ्यता के केंद्र में रहा है- यह केवल सूचनाओं का संचय नहीं, बल्कि दुनिया को देखने, समझने और बदलने का एक तरीका है। समय के साथ यह तरीका लगातार बदलता रहा है, और इसी बदलाव ने हमें नई-नई विचारधाराओं, शिक्षण पद्धतियों और सामाजिक संरचनाओं से परिचित कराया है। आज जब हम 21वीं सदी में हैं, तो यह आवश्यक हो गया है कि हम यह समझें कि आधुनिक ज्ञान की धाराएँ और पाठ्यक्रम किस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, और किन वैचारिक प्रवाहों से प्रभावित हो रहे हैं। थॉमस कुह्न (1962) ने अपने क्रांतिकारी विचारों के माध्यम से यह बताया कि जब किसी क्षेत्र में सोचने और काम करने का ढांचा पूरी तरह बदल जाता है, तो इसे "पैराडाइम शिफ्ट" कहा जाता है। यह केवल सतही बदलाव नहीं, बल्कि एक बुनियादी रूपांतरण होता है—ऐसा परिवर्तन जो ज्ञान के मौजूदा स्वरूप को चुनौती देता है और उसकी जगह नए प्रतिमान स्थापित करता है। शिक्षा और पाठ्यक्रम भी इसी प्रकार के बदलावों से गुजर रहे हैं। वर्तमान समय में शिक्षा मात्र विषयवस्तु की जानकारी नहीं रही, बल्कि यह एक बहुआयामी प्रक्रिया बन चुकी है, जिसमें सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय चेतना, विविधता की स्वीकृति, तकनीक की समझ और समावेशन जैसे पहलुओं का समावेश हो रहा है। ज्ञान के स्रोत और स्वरूप अब एकांगी नहीं हैं, बल्कि वे बहुवचनात्मक और आलोचनात्मक होते जा रहे हैं। इसी संदर्भ में "ज्ञान एवं पाठ्यक्रम : प्रतिमान प्रतिस्थापन एवं अभिनव प्रवृत्तियाँ" की चर्चा महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह हमें यह समझने का अवसर देता है कि आज का पाठ्यक्रम किस प्रकार एक विचारधारा, एक दृष्टिकोण या एक नए प्रतिमान से निर्मित हो रहा है।

ज्ञान एवं पाठ्यक्रम – संकल्पना, बदलता स्वरूप, अंतरसंबंध

ज्ञान एक बहुआयामी और गतिशील अवधारणा है जिसे सामान्यतः सूचना, समझ, अनुभव और अंतर्दृष्टि के सामामेलन से उत्पन्न वास्तविकता का सटीक और विवेकपूर्ण प्रतिनिधित्व कहा जा सकता है। यह सिर्फ तथ्यों का संग्रह नहीं, बल्कि उन तथ्यों को समझने, उनके आपसी संबंधों को विश्लेषित करने और उस समझ को व्यवहार में सार्थक रूप से लागू करने की क्षमता है। प्लेटो ने ज्ञान को 'जस्टिफाइड ट्रू बिलीफ' अर्थात् "सत्यापित सच्चाई के रूप में परिभाषित किया" (हिन्तिका, 1974), यह सुझाव देते हुए कि किसी चीज़ को जानने के लिए सिर्फ उस पर विश्वास करना ही नहीं, बल्कि वह विश्वास सच होना चाहिए और उसके पीछे तर्कसंगत आधार होना चाहिए। भारतीय दर्शन में, ज्ञान (विद्या) को अज्ञान (अविद्या) के अंधकार को दूर करने वाली शक्ति माना गया है, जो मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करती है। ज्ञान वह चेतना है जो सही तरीके से उत्पन्न हुई हो। चेतना क्षणिक अनुभव है, केवल विश्वास का रूप नहीं, परन्तु यह विश्वास को जन्म देती है। जब यह चेतना सत्य के अनुरूप होती है, तो वह सत्य विश्वास का आधार बनती है। भारतीय दृष्टिकोण से कहें तो ज्ञान की घटना (Knowledge episode) वही है जहाँ चेतना उचित और प्रमाणिक तरीके से उत्पन्न हुई हो (फिलिप्स और वैद्य, 2011)। समय के साथ ज्ञान के स्वरूप में नाटकीय परिवर्तन आया है। प्रारंभिक समाज में ज्ञान मौखिक परंपराओं, लोककथाओं और व्यावहारिक कौशल तक सीमित था। नवपाषाण क्रांति के साथ कृषि संबंधी ज्ञान और फिर लेखन कला के विकास ने ज्ञान को संरक्षित और संचारित करना संभव बनाया, जिससे यह अधिक संरचित हुआ। यूनानियों ने तर्क और दर्शन को, जबकि भारत में वैदिक और बौद्ध परंपराओं ने आध्यात्मिक और गणितीय ज्ञान को बढ़ावा दिया। मध्ययुगीन काल में धार्मिक संस्थानों का ज्ञान पर प्रभुत्व रहा, लेकिन पुनर्जागरण और बाद में वैज्ञानिक क्रांति ने तर्क, प्रयोग और अवलोकन को ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख स्रोत बना दिया, जिससे विज्ञान का उदय हुआ। औद्योगिक क्रांति ने विशेषज्ञता पर बल दिया। वर्तमान डिजिटल युग में ज्ञान का स्वरूप सबसे अधिक परिवर्तनशील और विस्फोटक रहा है। इंटरनेट और सूचना प्रौद्योगिकी ने ज्ञान को सर्वसुलभ, अविश्वसनीय रूप से विशाल और लगातार

विकसित होने वाला बना दिया है। आज ज्ञान स्थिर तथ्यों से अधिक एक प्रक्रिया है – डेटा के विशाल समुद्र से सार्थक सूचना निकालने, उसका विश्लेषण करने और नए संदर्भों में उपयोग करने की क्षमता। सामूहिक बुद्धिमत्ता (विकिपीडिया जैसे प्लेटफॉर्म), कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा उत्पन्न ज्ञान, और अंतर्विषयक दृष्टिकोण आधुनिक ज्ञान की प्रकृति को परिभाषित कर रहे हैं, जहाँ गतिशीलता, सहयोग और नवाचार महत्वपूर्ण हैं, और चुनौती अब जानकारी प्राप्त करने में नहीं, बल्कि उसकी विश्वसनीयता और प्रासंगिकता निर्धारित करने में है।

पाठ्यक्रम (Curriculum) शिक्षा की रीढ़ है, जो एक संरचनात्मक एवं क्रमबद्ध योजना है जिसके माध्यम से शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को निर्देशित किया जाता है। सरल शब्दों में, यह वह सभी अनुभवों का योग है जो एक शिक्षण संस्थान विद्यार्थियों को शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रदान करता है। जॉन डीवी (1902) के अनुसार, "पाठ्यक्रम विद्यालय में प्रदान किए जाने वाले सभी अनुभवों का समुच्चय है," भारतीय शोधकर्ताओं एवं लेखकों के द्वारा कनिष्ठता की परिभाषा को खूब संदर्भित किया जाता है यद्यपि इस कथन के मूल स्रोत स्पष्ट नहीं है फिर भी यह सहज अर्थ प्रदान करता है कि, "पाठ्यक्रम कलाकार (अध्यापक) के हाथ में वह साधन है जिससे वह पदार्थ (विद्यार्थी) को अपने आदर्श (उद्देश्य) के अनुसार अपने स्टूडियो (स्कूल) में ढाल सके" अर्थात् एक ऐसा उपकरण बताया है जिसके द्वारा स्कूल विद्यार्थियों को उनके जीवन के लिए तैयार करते हैं।" वहीं स्मिथ (2000) के अनुसार पाठ्यक्रम की प्रक्रिया है जिसमें क्रमिक रूप से निम्न तत्व सम्मिलित हैं – **आवश्यकताओं का निदान, उद्देश्यों का निर्धारण, विषयवस्तु का चयन, विषयवस्तु का संगठन, अधिगम अनुभवों का चयन, अधिगम अनुभवों का संगठन, मूल्यांकन का निर्धारण**। समय के साथ इसकी प्रकृति और दायरा में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। प्रारंभिक रूप से, पाठ्यक्रम का स्वरूप अत्यंत संकुचित और विषय-केंद्रित था, जो मुख्यतः साहित्य, दर्शन और धर्मशास्त्र तक सीमित था तथा इसका उद्देश्य सामाजिक मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करना था। औद्योगिक क्रांति के बाद, व्यावसायिक कौशल और वैज्ञानिक ज्ञान पर बल दिए जाने के कारण पाठ्यक्रम का दायरा विस्तृत हुआ। 20वीं शताब्दी में प्रगतिशील शिक्षावादियों जैसे जॉन डीवी के प्रभाव से बाल-केंद्रित शिक्षा पर जोर दिया गया, जिससे पाठ्यक्रम में लचीलापन आया और इसमें विद्यार्थियों की रुचियों, अनुभवों और व्यावहारिक गतिविधियों को स्थान मिला। वर्तमान समय में, पाठ्यक्रम का स्वरूप पारंपरिक ज्ञान के प्रसारण से आगे बढ़कर एक सक्रिय और समग्र दस्तावेज बन गया है। आधुनिक पाठ्यक्रम की प्रमुख विशेषताओं में बहु-विषयक एकीकरण, कौशल-आधारित शिक्षा (जैसे समस्या-समाधान, रचनात्मकता, सहयोग), डिजिटल साक्षरता पर बल, और जीवनोपयोगी कौशलों का समावेश शामिल है। यह रटत विद्या के स्थान पर अवधारणात्मक समझ, मूल्य शिक्षा, और वैश्विक नागरिकता के विकास पर केंद्रित है। आज का पाठ्यक्रम एक गतिशील मार्गदर्शक है जो एक तेजी से बदलते समाज की मांगों को पूरा करने के लिए लगातार विकसित हो रहा है और विद्यार्थियों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने का प्रयास कर रहा है।

ज्ञान और पाठ्यक्रम के बीच का संबंध शिक्षा प्रणाली का मूल आधार है, जहाँ एक दूसरे के साथ गहराई से अंतर्निहित और सह-निर्भर हैं। सैद्धांतिक रूप से, ज्ञान वह विशाल, गतिशील और निरंतर विकसित होने वाला महासागर के सामान है, जबकि पाठ्यक्रम एक सोची-समझी योजना या मानचित्र है जो उस महासागर में से उन चुनिंदा मार्गों, द्वीपों और खजानों को चिह्नित करता है, अर्थात् ज्ञान प्राप्ति जहाँ मूल लक्ष्य है वहीं पाठ्यक्रम माध्यम। यह संबंध स्थिर न होकर गतिशील है, जो ज्ञान की प्रकृति में होने वाले बदलावों के साथ-साथ स्वयं भी रूपांतरित होता रहता है। ऐतिहासिक रूप से, जब ज्ञान को स्थिर, सार्वभौमिक और प्राधिकरण-आधारित माना जाता था, जैसे वैदिक या मध्ययुगीन धार्मिक ज्ञान, तो पाठ्यक्रम का स्वरूप भी दृढ़, पाठ्यपुस्तक-केंद्रित और स्मृति पर आधारित था, जिसका उद्देश्य मुख्य रूप से सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करना था। जैसे-जैसे ज्ञान की अवधारणा में बदलाव आया, विशेष रूप से पुनर्जागरण और वैज्ञानिक क्रांति के बाद, जब तर्क, अनुभव और प्रयोग

को ज्ञान का आधार माना जाने लगा, तो पाठ्यक्रम में भी विज्ञान और तर्कशास्त्र जैसे विषयों का प्रवेश हुआ और वह कुछ हद तक लचीला बना। जॉन डीवी जैसे शिक्षाशास्त्रियों ने ज्ञान को एक सक्रिय और अनुभवजन्य प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया, जिसका सीधा प्रभाव पाठ्यक्रम पर पड़ा और उसमें व्यावहारिक गतिविधियों, परियोजनाओं और बाल-केंद्रित शिक्षण पद्धतियों को स्थान मिला। वर्तमान डिजिटल युग में, जहाँ ज्ञान का भंडार अभूतपूर्व गति से विस्तारित हो रहा है और उसकी पहुंच सर्वव्यापी है, वहाँ पाठ्यक्रम की भूमिका मात्र जानकारी पहुँचाने की बजाय उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। आज का पाठ्यक्रम उस विशाल सूचना समुद्र में से सार्थक ज्ञान को छँटने, उसका विश्लेषण करने, मूल्यांकन करने और रचनात्मक ढंग से उपयोग करने के कौशल (21वीं सदी के कौशल) सिखाने का माध्यम बन गया है। अतः, पाठ्यक्रम वह सेतु है जो समाज में मौजूद ज्ञान की सामूहिक समझ और व्यक्तिगत शिक्षार्थी के बीच संबंध स्थापित करता है। यह ज्ञान के चयन, संगठन और हस्तांतरण की एक सोद्देश्य प्रक्रिया है। ज्ञान में होने वाला every परिवर्तन पाठ्यक्रम के उद्देश्यों, विषय-वस्तु और शिक्षाविज्ञान को प्रभावित करता है, और इसी तरह एक अभिनव और प्रासंगिक पाठ्यक्रम नए ज्ञान के सृजन के लिए उत्प्रेरक का कार्य करता है। दोनों एक द्वंद्वत्मक संबंध में बंधे हैं, जहाँ एक के बिना दूसरे की कल्पना अधूरी है, और दोनों मिलकर शिक्षा की गुणवत्ता और दिशा निर्धारित करते हैं।

ज्ञान एवं पाठ्यक्रम में निदर्शन प्रतिस्थापन व अभिनव प्रवृत्तियाँ

शिक्षा के क्षेत्र में समय-समय पर नए प्रतिमान उभरते रहे हैं। प्रारंभिक दौर में शिक्षा ज्ञान-संप्रेषण और शिक्षक-केंद्रित थी, जहाँ पाठ्यपुस्तक और कक्षा मुख्य साधन थे। आगे चलकर औद्योगिक क्रांति और वैज्ञानिक प्रगति ने शिक्षा को व्यावहारिक और कौशलमूलक बनाया। 20वीं सदी में लोकतांत्रिक व मानवतावादी विचारों ने शिक्षण को शिक्षार्थी-केंद्रित दिशा दी। वर्तमान में, सूचना-प्रौद्योगिकी और वैश्विक परिप्रेक्ष्य ने शिक्षा को डिजिटल, अंतर्विषयक और सतत विकास उन्मुख बना दिया है। इस ऐतिहासिक क्रम से स्पष्ट है कि शिक्षा लगातार समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप नए-नए प्रतिमान गढ़ती और प्रतिस्थापित करती रही है।

1) ज्ञान एवं पाठ्यक्रम में उभरते प्रतिमान

प्रतिमान	मुख्य विशेषताएँ	उद्देश्य
प्रौद्योगिकी आधारित	ई-लर्निंग, स्मार्ट क्लासरूम, वर्चुअल लैब, कहीं भी-कभी भी शिक्षा	सीखने को डिजिटल, आकर्षक और सुलभ बनाना
कौशल आधारित	4Cs – चिंतन, रचनात्मकता, संचार, सहयोग; इंटरनेट, व्यावसायिक शिक्षा	नौकरी से आगे बढ़कर लचीला और उद्यमशील व्यक्तित्व तैयार करना
शिक्षार्थी-केंद्रित	व्यक्तिगत गति और रुचि के अनुसार शिक्षा, प्रोजेक्ट व समस्या आधारित अधिगम	प्रत्येक विद्यार्थी की अनूठी आवश्यकता पूरी करना
बहुविषयक एवं अंतर्विषयक	STEAM शिक्षा, विषयों का एकीकरण, NEP 2020 का समर्थन	समग्र और नवाचारी सोच का विकास
सतत विकास आधारित	पर्यावरण शिक्षा, SDGs, सामाजिक न्याय, वैश्विक नागरिकता	जिम्मेदार नागरिक बनाना और वैश्विक चुनौतियों का समाधान

समावेशी प्रतिमान	दिव्यांग व वंचित छात्रों को समान अवसर, सहायक तकनीक का उपयोग	“सबके लिए शिक्षा” और सामाजिक समानता सुनिश्चित करना
------------------	---	--

1. प्रौद्योगिकी आधारित प्रतिमान

प्रौद्योगिकी आधारित प्रतिमान शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी मोड़ का प्रतीक है। इसने ज्ञान की पहुँच, प्रस्तुति और अनुभव की पारंपरिक अवधारणा को पूरी तरह बदल दिया है। पहले जहाँ शिक्षा केवल कक्षा और पुस्तकों तक सीमित थी, वहीं आज यह डिजिटल प्लेटफॉर्म, स्मार्ट क्लासरूम, और ई-लर्निंग साधनों तक विस्तृत हो चुकी है। SWAYAM, Coursera जैसे प्लेटफॉर्म विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर की सामग्री सुलभ कराते हैं। वर्चुअल लैब्स (जैसे OLABs) महंगे उपकरणों की अनुपस्थिति में भी प्रयोग की सुविधा देते हैं। स्मार्ट बोर्ड, मल्टीमीडिया सामग्री और ऑगमेंटेड रियलिटी शिक्षा को और अधिक जीवंत और रोचक बनाते हैं। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि शिक्षा अब 'Anywhere Anytime Learning' की दिशा में अग्रसर है, जहाँ विद्यार्थी अपनी गति से, अपनी आवश्यकता अनुसार सीख सकते हैं। इस प्रतिमान ने शिक्षक की भूमिका को भी बदल दिया है; अब वे ज्ञान देने वाले से अधिक, तकनीकी मार्गदर्शक और सहयोगी बन रहे हैं। हालांकि, इसकी सफलता डिजिटल विभाजन को दूर करने और शिक्षकों के तकनीकी प्रशिक्षण पर निर्भर है। यदि यह चुनौतियाँ हल हो जाएँ, तो प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी और सशक्त बना सकती है।

2. कौशल आधारित प्रतिमान

कौशल आधारित प्रतिमान शिक्षा के उद्देश्य और स्वरूप दोनों में गहरा परिवर्तन करता है। पारंपरिक शिक्षा में जहाँ तथ्यों और जानकारी के संग्रहण पर जोर दिया जाता था, वहीं यह प्रतिमान छात्रों में जीवन और कार्य से जुड़े व्यावहारिक कौशल विकसित करने पर बल देता है। इसका मानना है कि बदलती दुनिया में केवल रटा हुआ ज्ञान पर्याप्त नहीं है; असली आवश्यकता है समस्याओं का समाधान करने, नई परिस्थितियों में अनुकूलन करने और नवाचार करने की क्षमता की। यही कारण है कि इस प्रतिमान में 21वीं सदी के कौशल—समालोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking), रचनात्मकता (Creativity), संचार (Communication), और सहयोग (Collaboration)—को शिक्षा का आधार बनाया गया है (सुपेना एवं अन्य, 2021)। आज के पाठ्यक्रम को इस प्रकार तैयार किया जा रहा है कि विद्यार्थी केवल सैद्धांतिक ज्ञान न पाकर, उसे वास्तविक जीवन की स्थितियों में लागू कर सकें। व्यावसायिक शिक्षा, इंटरशिप, प्रोजेक्ट आधारित कार्य और उद्योग-शिक्षा साझेदारी इस दृष्टिकोण को साकार कर रहे हैं। इसका लक्ष्य केवल नौकरी पाने वाले नहीं, बल्कि उद्यमशील, लचीले और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व गढ़ना है। इस प्रतिमान का महत्व इस बात में है कि यह छात्रों को भविष्य की अप्रत्याशित चुनौतियों के लिए तैयार करता है और उन्हें ज्ञान-आधारित समाज के सक्रिय सहभागी बनने की शक्ति देता है।

3. शिक्षार्थी-केंद्रित प्रतिमान

शिक्षार्थी-केंद्रित प्रतिमान शिक्षा को 'शिक्षक और विषय' से हटाकर 'विद्यार्थी और उसकी आवश्यकताओं' पर केंद्रित करता है। पारंपरिक व्यवस्था में सभी छात्रों के लिए समान पद्धति अपनाई जाती थी, जबकि इस प्रतिमान का आधार है कि प्रत्येक शिक्षार्थी की गति, रुचि, पृष्ठभूमि और शैली अलग-अलग होती है। इसलिए शिक्षा का स्वरूप भी उनके अनुरूप होना चाहिए। इस दृष्टिकोण में पाठ्यक्रम को एक लचीले ढाँचे के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें विद्यार्थी अपनी गति और रुचि के अनुसार आगे बढ़ सकते हैं। इसमें व्यक्तिगत शिक्षण पथ

'Personalized Learning Path' महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षण पथ का मतलब सीखने को जीवन से जोड़ना। इसमें लोग, विचार और संसाधन आपस में मिलकर रास्ते बनाते हैं। हर कोई इसमें भाग ले सकता है और सीखते-सीखते आगे बढ़ सकता है। इसका मकसद है सीख को आसान, जुड़ा हुआ और जीवन उपयोगी बनाना (स्मिथ,2014)। प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण, समस्या आधारित अधिगम और खोज आधारित अधिगम इसके प्रमुख साधन हैं। इस प्रतिमान के अंतर्गत विद्यार्थी निष्क्रिय श्रोता न होकर सक्रिय सहभागी बनते हैं। वे स्वयं ज्ञान की खोज, निर्माण और प्रयोग करते हैं। शिक्षक अब सर्वज्ञाता की भूमिका से हटकर मार्गदर्शक, सहयोगी और प्रेरक बन जाते हैं। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, स्वतंत्र चिंतन और जिज्ञासा को प्रोत्साहित करता है। साथ ही, यह शिक्षा को एक आनंददायक और जीवन से जुड़ा हुआ अनुभव बना देता है। यही कारण है कि शिक्षार्थी-केंद्रित प्रतिमान आधुनिक शिक्षा का सबसे मानवीय और प्रगतिशील आयाम माना जाता है।

4. बहुविषयक एवं अंतर्विषयक प्रतिमान

बहुविषयक एवं अंतर्विषयक प्रतिमान आधुनिक शिक्षा का वह स्वरूप है जो वास्तविक जीवन की जटिलताओं को ध्यान में रखकर विकसित हुआ है। जीवन की समस्याएँ कभी भी केवल एक विषय तक सीमित नहीं होतीं, बल्कि वे अनेक विषयों की जानकारी और दृष्टिकोण की माँग करती हैं। पारंपरिक शिक्षा में विषय अलग-अलग खानों में बाँटे जाते थे और उनके बीच कोई सामंजस्य नहीं होता था। लेकिन इस प्रतिमान में विभिन्न विषयों को आपस में जोड़कर पढ़ाया जाता है, ताकि छात्रों में समग्र और रचनात्मक समझ विकसित हो सके। बहुविषयक दृष्टिकोण में विद्यार्थी विभिन्न विषयों को एक साथ पढ़ते हैं, जबकि अंतर्विषयक दृष्टिकोण इससे एक कदम आगे बढ़कर विभिन्न विषयों की सीमाओं को तोड़कर उन्हें एकीकृत करता है। उदाहरण के लिए, STEAM शिक्षा (Science, Technology, Engineering, Arts and Mathematics) में विज्ञान और तकनीक को कला और रचनात्मकता के साथ जोड़ा जाता है, भविष्य की नौकरी के अवसरों के लिए छात्रों को तैयार करने की आवश्यकता को देखते हुए विद्यालय अब अपने पाठ्यक्रम पर विशेष ध्यान देने लगे हैं और विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित में छात्रों की उपलब्धि को बेहतर बनाने के लिए बदलाव कर रहे हैं। स्टेम शिक्षा पर शोध कई तरीकों, परिणामों, विषयों और अध्यापकों के साथ जुड़ा है, जिसका उद्देश्य छात्रों और शिक्षकों के बारे में अधिक जानना है। इस क्षेत्र में कुछ शोध हो चुका है, लेकिन और शोध की ज़रूरत है—चाहे वह कक्षा में सीधे लागू होने वाला व्यावहारिक अध्ययन हो या कठोर गुणात्मक और मात्रात्मक शोध परियोजनाएँ (बार्सेलोना,2014)। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस दृष्टिकोण को विशेष रूप से प्रोत्साहित करती है। इसका उद्देश्य है कि विद्यार्थी अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार भौतिकी के साथ संगीत या गणित के साथ इतिहास भी पढ़ सकें। यह प्रतिमान ऐसे शिक्षार्थियों का निर्माण करता है जो न केवल विशेषज्ञ हों, बल्कि व्यापक दृष्टिकोण और नवाचारी सोच से युक्त हों।

5. सतत विकास आधारित प्रतिमान

जिस तरह से मानव एवं पर्यावरण के बदलते रिश्ते ने मनुष्य, समाज एवं प्रकृति के बिच के संतुलन को बिगाड़ दिया है, पोषणीय अधिगम उपागम आज की शिक्षा की आवश्यकता बन गई है (कुमार,2019) सतत विकास आधारित प्रतिमान शिक्षा को केवल व्यक्तिगत सफलता या नौकरी तक सीमित न रखकर, समाज और सम्पूर्ण पृथ्वी की भलाई से जोड़ता है। इसका मुख्य विचार है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल दक्ष श्रमिक बनाना नहीं, बल्कि जिम्मेदार वैश्विक नागरिक तैयार करना है। इस प्रतिमान में संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को शिक्षा से जोड़कर देखा जाता है। इसमें पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय,

नैतिक शिक्षा और वैश्विक नागरिकता जैसे मुद्दों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाता है। इसका मकसद छात्रों में केवल जानकारी भरना नहीं, बल्कि उनमें सक्रिय भागीदारी और उत्तरदायित्व की भावना जगाना है। विद्यार्थी यह सीखते हैं कि उनके व्यक्तिगत और सामूहिक कार्य समाज और पर्यावरण पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं, और वे सकारात्मक बदलाव कैसे ला सकते हैं। उदाहरणस्वरूप, ऊर्जा संरक्षण, प्लास्टिक उपयोग में कमी, या सामुदायिक सेवा जैसे छोटे-छोटे कार्य भी बड़े बदलाव ला सकते हैं। इस प्रतिमान से शिक्षार्थियों में 'Action Competence' यानी ठोस कदम उठाने की क्षमता विकसित होती है। यही कारण है कि यह शिक्षा को मानवता की सबसे बड़ी चुनौतियों—जलवायु संकट, असमानता और सामाजिक अन्याय—के समाधान की दिशा में अग्रसर करता है।

6. समावेशी प्रतिमान

दुनिया की एक तिहाई आबादी शिक्षा के एक सामान्य अवसर से वंचित है गरीबी, असमानता एवं बहिष्करण इसके सबसे बड़े कारक हैं (कुमार, 2019)। समावेशी प्रतिमान आधुनिक शिक्षा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और संवेदनशील आयाम है, जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी छात्र को उसकी सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक, मानसिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर शिक्षा से वंचित न होना पड़े। यह प्रतिमान इस विश्वास पर आधारित है कि शिक्षा सभी का अधिकार है और हर बच्चा, चाहे उसकी विशेष आवश्यकताएँ हों या न हों, समान अवसरों का हकदार है। इस दृष्टिकोण में विद्यालय और पाठ्यक्रम को ऐसा बनाया जाता है जहाँ दिव्यांग विद्यार्थी, वंचित वर्ग, अल्पसंख्यक समुदाय या सामाजिक रूप से पिछड़े बच्चे भी सहजता से सीख सकें। समावेशी शिक्षा न केवल अलग-अलग क्षमताओं वाले छात्रों को एक साथ बैठकर पढ़ाने की प्रक्रिया है, बल्कि यह सहयोग, संवेदना और विविधता के मूल्य भी सिखाती है। शिक्षक की भूमिका यहाँ और भी महत्वपूर्ण हो जाती है—वे छात्रों की विशेष आवश्यकताओं को समझकर शिक्षण पद्धति में लचीलापन लाते हैं, सहायक उपकरणों (Assistive Technologies) का प्रयोग करते हैं और व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। भारत में **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020)** और **समग्र शिक्षा अभियान** ने समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयास किए हैं। इस प्रतिमान का अंतिम लक्ष्य यह है कि कोई भी बच्चा "छूटे नहीं" और हर विद्यार्थी अपनी क्षमता के अनुसार सम्मानजनक, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सके। इस तरह समावेशी प्रतिमान शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक समानता और न्याय स्थापित करने का सशक्त साधन बनाता है।

हाल के कुछ वर्षों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता तेजी से ज्ञान की दुनिया को बदल रहा है ऐसे में एआई आधारित प्रतिमान निश्चित बड़े ज्ञान एवं पाठ्यक्रम के क्षेत्र में बड़े बदलाव को जन्म देगा। यद्यपि यह विकास के प्रारंभिक चरण में है पर इसकी शुरुआत हो चुकी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा को और अधिक व्यक्तिगत (Personalized), त्वरित (Instant) और कुशल (Efficient) बनाने की दिशा में काम करता है। इसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग विद्यार्थियों की सीखने की शैली, गति और रुचि को समझने के लिए किया जाता है और उसी आधार पर उन्हें अनुकूलित सामग्री (Adaptive Content) उपलब्ध कराई जाती है। उदाहरण के लिए, **AI ट्यूटर, चैटबॉट, वर्चुअल असिस्टेंट, और लर्निंग एनालिटिक्स** छात्रों की प्रगति का विश्लेषण कर उन्हें व्यक्तिगत मार्गदर्शन देते हैं। AI आधारित सिस्टम जटिल डेटा का विश्लेषण करके शिक्षक को यह जानकारी दे सकते हैं कि किस विद्यार्थी को किस क्षेत्र में कठिनाई हो रही है। इससे शिक्षक समय बचाकर अधिक प्रभावी मार्गदर्शन दे सकते हैं। इसके अलावा, स्वचालित मूल्यांकन (Automated Assessment), भाषा अनुवाद (Language Translation) और विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए सहायक तकनीक (Assistive Tools) शिक्षा को और अधिक समावेशी बनाते हैं। हालाँकि, इस प्रतिमान की सफलता नैतिकता (Ethics), डेटा सुरक्षा (Data Privacy) और मानवीय

संवेदनशीलता को बनाए रखने पर निर्भर करती है। यदि इसे संतुलित रूप से लागू किया जाए तो एआई आधारित प्रतिमान शिक्षा को नई ऊँचाइयों तक ले जाने की क्षमता रखता है।

इन बदलावों की सीमाएँ और इससे जुड़ी चुनौतियाँ

ज्ञान एवं पाठ्यक्रम के क्षेत्र में उभरते प्रतिमान निस्संदेह अभिनव और परिवर्तनकारी हैं, किंतु प्रत्येक प्रतिमान अपनी-अपनी सीमाएँ और चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है। **प्रौद्योगिकी आधारित प्रतिमान** का सबसे बड़ा अवरोध डिजिटल विभाजन है; ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में इंटरनेट तथा उपकरणों की कमी से यह शिक्षा समान रूप से सब तक नहीं पहुँच पाती। साथ ही, शिक्षकों को तकनीकी दक्षता की कमी और विद्यार्थियों की स्क्रीन-निर्भरता भी नई समस्याएँ पैदा करती है। जबकि अगर बात **कौशल आधारित प्रतिमान की हो तो** इसमें सबसे बड़ी चुनौती यह है कि पाठ्यक्रम और मूल्यांकन प्रणाली अभी भी अधिकतर तथ्यात्मक ज्ञान पर केंद्रित है, जिससे 21वीं सदी के कौशलों को व्यवहार में उतारना कठिन होता है। उद्योग और शिक्षा जगत के बीच समन्वय की कमी भी इसे सीमित करती है। वहीं **शिक्षार्थी-केंद्रित प्रतिमान** में संसाधनों और समय की कमी सबसे बड़ी बाधा है, क्योंकि प्रत्येक छात्र की आवश्यकता के अनुसार सामग्री और गतिविधियाँ तैयार करना व्यावहारिक रूप से चुनौतीपूर्ण है। साथ ही, यदि शिक्षक की भूमिका स्पष्ट न हो तो यह पद्धति अव्यवस्थित हो सकती है। इसी प्रकार **बहुविषयक एवं अंतर्विषयक प्रतिमान** में विषयों के बीच वास्तविक समन्वय स्थापित करना कठिन होता है; अक्सर यह केवल औपचारिक या सतही स्तर तक सीमित रह जाता है। शिक्षकों को विभिन्न विषयों का संयुक्त ज्ञान होना आवश्यक है, लेकिन वर्तमान शिक्षक-प्रशिक्षण इस दिशा में अपर्याप्त है। इसी प्रकार **सतत विकास आधारित प्रतिमान** के साथ भी चुनौती है जैसे- छात्र केवल सैद्धांतिक जानकारी तक सीमित रह जाते हैं और वास्तविक जीवन में सतत व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित नहीं हो पाते। इसके अलावा, शिक्षा संस्थानों पर रोजगारोन्मुख दबाव इतना अधिक है कि पर्यावरणीय और सामाजिक विषयों को गौण मान लिया जाता है। वहीं **समावेशी प्रतिमान** की सबसे बड़ी सीमा यह है कि विद्यालयों में आवश्यक संसाधन, प्रशिक्षित विशेष शिक्षक और सहायक तकनीक उपलब्ध नहीं होती, जिससे दिव्यांग या वंचित छात्रों की ज़रूरतें पूरी नहीं हो पातीं। साथ ही, सामाजिक दृष्टिकोण में भेदभाव और संवेदनशीलता की कमी भी इसे बाधित करती है। सबसे बड़ी समस्या अभी **एआई आधारित प्रतिमान** के साथ है, इसकी सबसे बड़ी चुनौती नैतिकता और डेटा गोपनीयता की है; यदि विद्यार्थियों के व्यक्तिगत डेटा का दुरुपयोग हो तो यह गंभीर खतरा बन सकता है। साथ ही, शिक्षा का अत्यधिक स्वचालन मानवीय संवेदनशीलता और शिक्षक-छात्र संबंधों को कमजोर कर सकता है।

निष्कर्ष

ज्ञान एवं पाठ्यक्रम के क्षेत्र में उभरते प्रतिमान—प्रौद्योगिकी आधारित, कौशल आधारित, शिक्षार्थी-केंद्रित, बहुविषयक-अंतर्विषयक, सतत विकास, समावेशी एवं एआई आधारित—सभी ने पाठ्यक्रम और अधिगम की प्रकृति को नए सिरे से परिभाषित किया है। इन प्रतिमानों ने यह स्थापित किया है कि शिक्षा केवल ज्ञान के संप्रेषण तक सीमित नहीं, बल्कि यह व्यक्तित्व विकास, सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय चेतना और वैश्विक नागरिकता का माध्यम भी है। हालांकि, इन प्रतिमानों के सामने डिजिटल विभाजन, संसाधन की कमी, शिक्षक प्रशिक्षण का अभाव, सामाजिक असमानता, नैतिकता और डेटा सुरक्षा जैसी चुनौतियाँ विद्यमान हैं। यदि इन सीमाओं को दूर नहीं किया गया तो शिक्षा में समानता और गुणवत्ता का लक्ष्य अधूरा रह जाएगा। अतः आवश्यक है कि नीतिगत स्तर पर ठोस पहल की जाए। सबसे पहले, डिजिटल अवसंरचना का विस्तार और सस्ती तकनीक उपलब्ध कराकर सभी छात्रों

को प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित की जाए। दूसरा, शिक्षक प्रशिक्षण को नए प्रतिमानों के अनुरूप पुनर्गठित किया जाए ताकि वे तकनीकी दक्षता, अंतर्विषयक दृष्टिकोण और समावेशी शिक्षण कौशल विकसित कर सकें। तीसरा, पाठ्यक्रम और मूल्यांकन पद्धति में वास्तविक जीवन से जुड़े कौशलों और सतत विकास के मुद्दों को प्रमुखता दी जाए। चौथा, वंचित और दिव्यांग छात्रों के लिए विशेष संसाधन और सहायक तकनीक अनिवार्य की जाए ताकि समावेशी शिक्षा वास्तविकता बने। पाँचवाँ, एआई के उपयोग में नैतिक दिशानिर्देश और डेटा सुरक्षा के स्पष्ट मानक बनाए जाएँ, ताकि तकनीक शिक्षा का सहायक बने, विकल्प नहीं। इन सुझावों को व्यवहार में लाकर शिक्षा न केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम होगी बल्कि एक ऐसी प्रक्रिया बनेगी जो व्यक्तियों को सक्षम, जिम्मेदार और संवेदनशील वैश्विक नागरिक बनने के लिए प्रेरित करेगी।

संदर्भ सूची

1. कुमार, आर (2019). एजुकेशन एंड लर्निंग फॉर सस्टेनेबिलिटी. चन्द्रा एम्. एवं कुमार, आर (स.) कंटेम्पररी इंडिया: सम रिफ्लेक्सन, नवयुग बुक इंटरनेशनल, दिल्ली, 172.
2. कुमार, आर (2019). एजुकेशन फॉर पीस एंड सोशल हार्मोनी, एवन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 29.
3. कुह्न, थॉमस (1962). द स्ट्रक्चर ऑफ साइंटिफिक रेवोल्यूशन्स. यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, शिकागो, 35-42.
4. ड्यूवी, जॉन (1902). द चाइल्ड एंड द करिकुलम. शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 29.
5. फिलिप्स, एस., और वैद्य, ए. (2011). एपिस्टेमोलॉजी इन क्लासिकल इंडियन फिलॉसफी. स्टैनफोर्ड एनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी.
6. बार्सिलोना, के. (2014). 21st सेंचुरी करिकुलम चेंज इनिशिएटिव: अ फोकस ऑन STEM एजुकेशन एज एन इंटीग्रेटेड अप्रोच टू टीचिंग एंड लर्निंग. अमेरिकन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 2(10), 862-875.
7. सुपेना, आई., दार्मुकी, ए., और हरियादी, ए. (2021). द इन्फ्लुएंस ऑफ 4C (कंस्ट्रक्टिव, क्रिटिकल, क्रिएटिविटी, कॉलैबोरेटिव) लर्निंग मॉडल ऑन स्टूडेंट्स' लर्निंग आउटकमस. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंस्ट्रक्शन, 14(3), 873-892.
8. स्मिथ, एम.के. (2000). व्हाट इस करिकुलम? एक्सप्लोरिंग थियरी एंड प्रैक्टिस. द एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इनफॉर्मल एजुकेशन.
9. स्मिथ, पी. (2014). द कमिंग एरा ऑफ पर्सनलाइज्ड लर्निंग पाथ्स. एडुकाॅज़ रिव्यू, 49(6).
10. हिंटिकका, जे. (1974). नॉलेज एंड इट्स ऑब्जेक्ट्स इन प्लेटो. इन नॉलेज एंड द नोन: हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव्स इन एपिस्टेमोलॉजी. स्प्रिंगर नीदरलैंड्स, डॉर्ड्रेक्ट, 1-30.